तद्देहं चेव जहण्णोहिखेत्तमिदि भणंतेण गाहासुत्तेण सह विरोहादो । जेणोहिणाणी एगोलीए चेव जाणदि जेण ण सुत्तविरोहो त्ति के वि भणंति । णेदं पि घडदे, चक्खिंदियणाणादो वि तस्स जहण्णत्तप्पसंगादो । कुदो? चक्खिंदियणाणेण संखेज्जसूचिअंगुल-वित्थारुस्सेहायामखेत्तब्भंतरट्ठिदवत्थुपरिच्छेददंसणादो, एदस्स जहण्णोहिखेत्तायामस्स असंखेज्जजोयणत्तुवलंभादो च । होदु णाम असंखेज्जजोयणायामत्तमिच्छिज्जमाणत्तादो ? ण, एदस्स कालादो असंखेज्जगुणअध्दमासकालेण अणुमिदअसंखेज्जगुणभरहो-हिक्खेत्ते वि असंखेज्जजोयणायामाणुवलंभादो । किं चुक्कस्सदेसोहिणाणी संजदो सगुक्कस्सदव्वमादिं काऊण परमाणुत्तरादिकमेण ट्ठिदसव्वपोग्गलक्खंधे घणलोग-ब्भंतरट्ठिदे किमक्कमेण जाणदि ण जाणदि त्ति । जदि ण जाणदि, ण तस्स ओहिक्खेत्तं लोगो होदि, एगागासोलीए ठिदपोग्गलक्खंधपरिच्छेदकरणादो । ण च एसा एगागा-सपंती घणलोगपमाणं, तदसंखेज्जदिभागाए घणलोगपमाणत्तविरोहादो । ण च सो कुलसेल-

< जघन्य अवधिका क्षेत्र है ऐसा कहनेवाले गाथासूत्रके साथ विरोध होगा । >

< चूंकि अवधिज्ञानी एक श्रेणीमें ही जानता है, अतएव सूत्रविरोध नहीं होगा, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं। परन्तु यह भी घटित नहीं होता, क्योंकि, ऐसा माननेपर चक्षु इन्द्रिय जन्य ज्ञानकी अपेक्षा भी उसके जघन्यताका प्रसंग प्राप्त होता है । कारण कि चक्षु इन्द्रिय जन्य ज्ञानसे संख्यात सूच्यंगुल विस्तार, उत्सेध और आयामरूप क्षेत्रके भीतर स्थित वस्तुका ग्रहण देखा जाता है । तथा वैसा माननेपर इस जघन्य अवधिज्ञानकेक्षेत्रका आयाम असंख्यात योजन प्रमाण प्राप्त होगा । >

शंका- < यदि उक्त अवधिक्षेत्र असंख्यात योजन आयामरूप प्राप्त होता है तो होने दीजिये, क्योंकि, वह इष्ट ही है ? >

समाधान- < ऐसा नहीं कहा जा सकता, क्योंकि, इसके कालसे असंख्यातगुणे अर्ध मास कालसे अनुमित असंख्यातगुणे भरत रूप अवधिक्षेत्रमें भी असंख्यात योजन प्रमाण आयाम नहीं पाया जाता । दूसरे, उत्कृष्ट देशावधिज्ञानी संयत अपने उत्कृष्ट द्रव्यको आदि करके एक परमाणु आदि अधिक क्रमसे स्थित घनलोकके भीतर रहनेवाले सब पुद्गस्कन्धोंको क्या युगपत् जानता है या नहीं जानता ? यदि नहीं जानता है तो उसका अवधिक्षेत्र लोक नहीं हो सकता, क्योंकि, वह एक आकाशश्रेणीमें स्थित पुद्‌गलस्कन्धोंको ग्रहण करता है । और यह एक आकाशपंक्ति घनलोक प्रमाण हो नहीं सकती, क्योंकि,

घनलोकके असंख्यातवें भाग रूप उसमें घनलोक-प्रमाणत्वका विरोध है । इसके अतिरिक्त वह कलाचल मेरूपर्वत भवनविमान आत पथिवियों >

छक्खंडागमे वेयणाखंडे

'मेरूमहीयर-भवणविमाणट्ठपुढवी-देव-विज्जाहर-सरड-सरिसवादीणि वि पेच्छइ,एदेसिमेगागासे अवट्ठाणाभावादो । ण च तेसिमवयवं पि जाणदि, अविण्णादे अवयविम्हि एदस्स एसो अवयवो त्ति णादुमसत्तीदो । जदि अक्कमेण सव्वं घणलोगं जाणदि तो सिध्दो णो पक्खो, णिप्पडिवक्खत्तादो ।

'सुहुमणिगोदोगाहणाए घणपदरागारेण ठइदाए एगागासवित्थाराणेगोलिं चेव जाणदि त्ति के वि भणंति । णेदं पि घडदे, जद्देही सुहुमणिगोदजहण्णोगाहणा तद्देहं जहण्णोहिक्खेत्तमिदि भणंतेण गाहासुत्तेण सह विरोहादो । ण चाणेगोलीपरिच्छेदो छदुमत्थाणं विरूध्दो, चक्खिंदियणाणेगोलिंठियपोग्गलक्खंधपरिच्छेदुवलंभादो ।

< अंगुलमावलियाए भागमसंखेज्ज दो वि संखेज्जा ।

अंगुलमावलियंतो आवलियं चांगुलपुधत्तं (१ गो.जी. ४०४. अंगुलमावलियाणं भागमसंखिज्ज दोसु संखिज्जा । अंगुलमावलियंतों आवलिया अंगुलपुहुत्तं ।। विशे. भा. ६११ (नि. ३२) न.सू.गा.५०.) ।। ५ ।। >

< देव, विद्याधर, गिरगिट और सरीसृपादिकोंको भी नहीं जान सकेगा, क्योंकि, इनका एक आकाशमें अवस्थान नहीं है। और वह उनके अवयवको भी नहीं जानेगा, क्योंकि, अवयवीके अज्ञात होनेपर यह इसका अवयव है इस प्रकार जाननेकी शक्ति नहीं हो सकती । यदि वह युगपत् सब घनलोकको जानता है तो हमारा पक्ष सिध्द है, क्योंकि, वह प्रतिपक्षसे रहित है । >

< सूक्ष्म निगोद जीवकी अवगाहनाको घनप्रतराकारसे स्थापित करनेपर एक आकाश विस्ताररूप अनेक श्रेणीको ही जानता है, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । परन्तु यह भी घटित नहीं होता, क्योंकि, ऐसा होनेपर जितनी सूक्ष्म निगोद जीवकी जघन्य अवगाहना है उतना ही जघन्य अवधिका क्षेत्र है, ऐसा कहनेवाले गाथासूत्रके साथ विरोध होगा। और छद्मस्थोंके अनेक श्रेणियोंका ग्रहण विरूध्द नहीं है, क्योंकि, चक्षु इन्द्रिय जन्य ज्ञानसे अनेक श्रेणियोंमें स्थित पुद्गलस्कन्धोंका ग्रहण पाया जाता है । >

< देशावधिके उन्नीस काण्डकोंमेंसे प्रथम काण्डकमें जघन्य क्षेत्र घनांगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण और जघन्य काल आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । इसी काण्डकमें उत्कृष्ट क्षेत्र घनांगुलके संख्यातवें भाग प्रमाण और उत्कृष्ट काल आवलीके संख्यातवें भाग प्रमाण है । द्वितीय काण्डकमें क्षेत्र

घनांगुल प्रमाण और काल कुछ कम आवली प्रमाण है । तृतीय काण्डकमें क्षेत्र घनांगुलपृथक्त्व और काल पूर्ण आवली प्रमाण है ।। ५ ।। >

कदिअणियोगद्दारे देसोहिणाणपरूवणा

< आवलियपुधत्तं घण हत्थो तह गाउअं मुहुत्तंतो ।

जोयण भिण्णमुहुत्तं दिवसंतो पण्णुवीसं तुं (१ म.बं.१, पृ.२१. गो.जी.४०५. हत्थम्मि मुहुत्तंतो

दिवसंतो गाउयम्मि बोध्दव्वो । जोयणदिवसपुहुत्तं पक्खंत्तो पण्णवीसाओ । विशे.भा. ६१२ (नि.३३).नं.सू.गा.५१.) ।। ६ ।।

भरहम्मि अध्दमासो साहियमासो वि जंबुदीवम्मि ।

वासं च मणुअलोए वासपुधत्तं च रूजगम्मि (२ म. बं. १, पृ. २१. गो.जी. ४०६. भरहम्मि अध्दमासो जबुद्दीवम्मि साहिओ मासो । वासं च मणुयलोए वासपुहुत्तं च रूयगम्मि ।। विशे.भा.६१३ (नि.३४.).नं.सू.गा. ५२.) ।।७ ।।

पणुवीस जोयणाणं ओही वेंतर-कुमारवग्गाणं ।

संखेज्जजोयणाणं जोइसियाणं जहण्णोही (३ म.बं.१, पृ.२२.

पणुवीसजोयणाइं दिवसंतं च य

कुमार-भोम्माणं । संखेज्जगुणं खेत्तं बहुगं कालं तु जोइसिगे ।। गो.जी. ४२६.) ।। ८ ।।

असुराणमसंखेज्जा कोडीओ सेसजोदिसंताणं ।

संखातीदसहस्सा उक्कस्सो ओहिविसओ दु (४ म. बं. १, पृ. २२ गो.जी. ४२७.) ।। ९ ।। >

< चतुर्थ काण्डकमें काल आवलिपृथक्त्व और क्षेत्र एक घन हाथ प्रमाण है । पंचम काण्डकमें क्षेत्र गव्यूति अर्थात् एक कोश तथा काल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । छठे काण्डकमें क्षेत्र एक योजन और काल भिन्न मुहूर्त अर्थात् एक समय कम मुहूर्त प्रमाण है । सप्तम काण्डकमें काल कुछ कम एक दिवस और क्षेत्र पच्चीस योजन प्रमाण है ।।६ ।। >

< अष्टम काण्डकमें, क्षेत्र भरतक्षेत्र और काल अर्ध मास प्रमाण है । नवम काण्डकमें क्षेत्र जम्बूद्वीप और काल एक माससे कुछ अधिक है । दशवें काण्डकमें क्षेत्र मनुष्यलोक और काल एक वर्ष प्रमाण है । ग्यारहवें काण्डकमें क्षेत्र रूचकद्वीप और काल वर्षपृथकत्व प्रमाण है ।। ७ ।। >

< व्यन्तर और भवनवासी देवोंका जघन्य अवधिक्षेत्र पच्चीस योजन और ज्योतिषी देवोंका जघन्य अवधिक्षेत्र संख्यात योजन प्रमाण है ।।८ ।। >

< असुरकुमार देवोंके उत्कृष्ट अवधिज्ञानका विषयभूत क्षेत्र असंख्यात करोड योजन है । शेष नौ प्रकारके भवनवासी,व्यन्तर एवं ज्योतिषी देवोंका उत्कृष्ट अवधिक्षेत्र असंख्यात हजार योजन प्रमाण है ।। ९ ।। >

< छ. क. ४ >

< सक्कीसाणा पढमं दोच्चं तु सणक्कुमार-माहिंदा ।

तच्चं तु बम्ह-लंतय सुक्क-सहस्सारया चोत्थ (१ म.बं. १, पृ.२२

गो.जी. ४३०. विशे.भा. ६९८ (नि. ४८).) ।। १० ।।

आणद-पाणदवासी तह आरण-अच्चुदा य जे देवा ।

पस्संति पंचमखिदिं छट्ठिं गेवज्जया जे दु (२ म.बं.१, पृ.२३ गो.जी. ४३१.) ।। ११ ।।

सव्वं च लोयणालिं पस्संति अणुत्तरेसु जे देवा ।

सक्खेत्ते य सकम्मे रूवगदमणंतभागो दु (३ म.बं.१, पृ. २३ गो.जी. ४३२.

आणय-पाणयकप्पे देवा पासंति पंचमिं पुढविं । तं चेव आरणच्चुय ओहिण्णाणेण पासंति ।। छट्ठिं हेट्ठिम-मज्झिमगेविज्जा सत्तमिं च उवरिल्ला । संभिण्णलोगणालिं पासंति अणुत्तरा देवा ।। विशे. भा. ६९९-७०० (नि. ४९-५०).) ।। १२ ।। >

'एदाहि गाहाहि उत्तासेसोहिखेत्ताणमेसो अत्थो जहासंभवं परूवेदव्वो, अण्णहा पुव्वुत्तदोसप्पसंगादो । एवं जहण्णोहिक्खेत्तपरूवणा कदा ।'

'संपहि जहण्णोहिकालपमाणपरूवणं कस्सामो । तं जहा- आवलियाए असंखेज्ज-

< सौधर्म और ईशान स्वर्गके देव प्रथम पृथिवी तक, सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके देव द्वितीय पृथिवी तक, ब्रह्म और लान्तव कल्पोंके देव तृतीय पृथिवी तक, तथा शुक्र और सहस्त्रार स्वर्गोंके देव चतुर्थ पृथिवी तक देखते हैं ।।१०।। >

< आनत-प्राणत और आरण-अच्युत कल्पोंमें रहनेवाले जो देव हैं वे पंचम पृथिवी तक, तथा ग्रैवेयकोंमें उत्पन्न हुए देव छठी पृथिवी तक देखते हैं ।। ११ ।। >

< नौ अनुदिश और पांच अनुत्तरोंमें जो देव हैं वे सब लोकनाली अर्थात् कुछ कम चौदह राजु लम्बी और एक राजु विस्तृत लोकनालीको देखते हैं । स्वक्षेत्र अर्थात् अपने क्षेत्रके प्रदेशसमूहमेंसे एक प्रदेश कम करके अपने अपने अवधिज्ञानवरणकर्म द्रव्यमें एक वार अनन्त अर्थात् ध्रुवहारका भांग देना चाहिये । इस प्रकार एक एक प्रदेश कम करते हुए ध्रुवहारका भाग तब तक देना चाहिये जब तक उक्त प्रदेशसमूह समाप्त न हो जावे । ऐसा करनेपर जो द्रव्य प्राप्त हो वह विवक्षित अवधिका विषयभूत द्रव्य जानना चाहिये ।। १२ ।। >

< इन गाथाओं द्वारा कहे गये समस्त अवधिक्षेत्रोंका यह अर्थ यथासम्भव कहना चाहिये क्योंकि, अन्यथा पूर्वोक्त दोषोंका प्रसंग आता है । इस प्रकार जघन्य अवधिकेक्षेत्रकी प्ररूपणा की गई है । >

< अब जघन्य अवधिकेकालकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है- आवलीके>

कदिअणियोगद्दारे देसोहिणाणपरूवणा

ʻदिभाएण आवलियाए ओवट्टिदाए जहण्णोहिकालो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो होदि । एत्तिएण कालेण जं भूदं जं च भविस्सदि कज्जं तं जहण्णोहिणाणी जाणदि त्ति वुत्तं होदि । एदस्स कालो एत्तिओ चेव होदि त्ति कधं णव्वदे ? अंगुलमावलियाए भागमसंखेज्जे त्ति गाहासुत्तवयणादो णव्वदे । एवं जहण्णोहिकालपरूवणा कदा ⁄

ʻसपहि जहण्णोहिभावपरूवणं कस्सामो । तं जहा - जमप्पणो जाणिददव्वं तस्स अणंतेसु वट्टमाणपज्जाएसु तत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपज्जाया जहण्णोहिणाणेण विसईकया जहण्णभावो । केवि आइरिया जहण्णदव्वस्सुवरिट्ठिदरूव-रस-गंध-फासदिसव्वपजाए जाणदि त्ति भणंति । तण्ण घडदे, तेसिमाणंतियादो । ण च ओहिणाणमुक्कस्सं पि अणंतसंखावगमक्खमं, आगमो तहोवदेसाभावादो । दव्वट्टियणंत-पज्जाए पच्चक्खेण अपरिच्छिदंतो ओही कधं पच्चक्खेण दव्वं परिछिंदेज्ज ? ण, तस्स पज्जायावयवगयाणंतसंखं मोत्तूण असंखेज्जपज्जाजायावयवविसिट्ठदव्वपरिच्छेदयत्तादो ⁄

< असंख्यातवें भागका आवलीमें भाग देनेपर जघन्य अवधिका काल आवलीकेअसंख्यातवें भाग मात्र होता है । इतने मात्र कालमें जो कार्य हो चुका हो और जो होनेवाला हो उसे जघन्य अवधिज्ञानी जानता है, यह उक्त कथनका अभिप्राय है।>

ʻशंका⁄-< इसका काल इतना मात्र ही है, यह कैसे जाना जाता है ? >

ʻशंका⁄-< प्रथम काण्डकमें जघन्य क्षेत्र व काल क्रमश: घनांगुल और आवलीकेअसंख्यातवें भाग प्रमाण है इस गाथासूत्रकेकथनसे जाना जाता है । >

< इस प्रकार जघन्य अवधिकेकालकी प्ररूपणा की गई है । >

< अब जघन्य अवधिकेविषयभूत भावकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है - अपना जो जाना हुआ द्रव्य है उसकी अनन्त वर्तमान पर्यायोंमेंसे जघन्य अवधिज्ञानके द्वारा विषयीकृत आवलीके असंख्यातवें भागमात्र पर्यायें जघन्य भाव हैं । कितने ही आचार्य जघन्य द्रव्यकेऊपर स्थित रूप, रस, गन्ध एवं स्पर्श आदि रूप सब पर्यायोंको उक्त अवधिज्ञान जानता है, ऐसा कहते हैं । किन्तु वह घटित

नहीं होता, क्योंकि, वे अनन्त हैं । और उत्कृष्ट भी अवधिज्ञान अनन्त संख्याके जाननेमें समर्थ नहीं है, क्योंकि, आगममें वैसे उपदेशका अभाव है । >

ʿशंका‐< द्रव्यमें स्थित अनन्त पर्यायोंको प्रत्यक्षसे न जानता् हुआ अवधिज्ञान प्रत्यक्षसे द्रव्यको कैसे जानेगा ? >

ʿसमाधान‐< नहीं, क्योंकि, उक्त अवधिज्ञान पर्यायोंके अवयवोंमें रहनेवाली अनन्त संख्याको छोडकर असंख्यात पर्यायावयवोंसे विशिष्ट द्रव्यका ग्राहक है । >

ʿशंका‐< अतीत व अनागत पर्यायोंकी भाव संज्ञा क्यों नहीं है ? >

ʿतीदाणागयपज्जायाणं किण्ण भाववएसो ? ण, तेसिं कालत्तब्भुवगमादो । एवं जहण्णभावपरूवणा ॒

ʿसंपधि जहण्णदव्व-खेत्त-काल-भावपरिवाडीए ठविय बिदियमोहिणाणवियप्पं भणिस्सामो । तं जहा - मणदव्ववग्गणाए अणंतिमभागं (१ मणदव्ववग्गणाण वियप्पाणंतियसमं खु धुवहारो । अवरूक्कस्सविसेसा रूवाहिया तव्वियप्पा हु ।। गो.जी. ३८६.) देस-दव्व-परमोहिदव्वपरूव-णासु मेरूमहीहरं व अवट्ठिदं विरलेदूण जहण्णदव्वं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगरूवधरिदं दव्वस्स बिदियवियप्पो होदि (२ देसोहिअवरदव्वं धुवहारेणवहिदे हवे बिदियं । तदियादिवियप्पेसु वि असंखवारो त्ति एस कमो ।। गो.जी. ३९५.), पुव्विल्लजहण्णदव्वं पेक्खिदूण एग-दोपरमाणुआदीहि परिहीणपोग्गलखंधपरिच्छेयणक्खणाणणिमित्तोहिणाणावरणक्खओवसमाभावादो । कधमेदं णव्वदे ? ओहिणाणावरणस्स असंखेज्जलोगमेत्तीओ चेव पयडीओ त्ति वग्गणसुत्तादो । भावस्स जिणदिट्ठभावो असंखेज्जगुणगारो दादव्वो । खेत्त-काल॒

ʿसमाधान‐< नहीं है, क्योंकि, उन्हें स्वीकार किया गया है । >

< इस प्रकार जघन्य भावकी प्ररूपणा की गई हैं । >

< अब जघन्य द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावको परिपाटीसे स्थापित कर द्वितीय अवधिज्ञानके विकल्पको कहते हैं। वह इस प्रकार है - देशावधि, सर्वावधि और परमावधिके द्रव्यकी प्ररूपणाओंमें मेरू पर्वतके समान अवस्थित मनोद्रव्यवर्गणाके अनन्तवें भागका विरलन करके उसके ऊपर जघन्य द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर उसमें एक रूपधरित खण्ड द्रव्यका द्वितीय विकल्प होता है, क्योंकि, पूर्वोक्त जघन्य द्रव्यकी अपेक्षा करके एक दो परमाणु आदिकोंसे हीन पुद्‌गलस्कन्धके ग्रहण करनेमें समर्थ ऐसे ज्ञानके निमित्तभूत अवधिज्ञानावरणके क्षयोपशमका अभाव है । >

ʿशंका-< यह कैसे जाना जाता है ? >

ʿसमाधान-< वह अवधिज्ञानावरणकी असंख्यात लोक प्रमाण प्रकृतियां हैं इस वर्गणासूत्रसे जाना जाता है ।>

< भावका द्वितीय विकल्प लानेके लिये जिन भगवानसे देखा गया है स्वरूप जिसका ऐसा असंख्यात गुणकार देना चाहिये, अर्थात् भावका द्वितीय विकल्प प्रथम विकल्पसे असंख्यातगुणा है । क्षेत्र और काल जघन्य ही रहते हैं, क्योंकि, यहां उनकी वृध्दिका अभाव है ।>

कदिअणियोगद्दारे देसोहिणाणपरूवणा

ʿजहण्णा चेव, तेसिमेत्थ वुड्ढीएअभावादो । तेसिमेत्थ वुड्ढीए अभावो कधं णव्वदे ?-

< कालो चउण्ण वुड्ढी कालो भजियव्वो खेत्तवुड्ढीए ।>

< उड्ढीए दव्व-पज्जय भजिदव्वा खेत्त-काला य (१ म. बं.१, पृ.२२. गो.जी.४१२. काले चउण्ह वुड्ढी कालो भइयव्वु खेत्तवुड्ढीए । वुड्ढीए दव्वपज्जव भइयव्वा खित्त-काला उ।। विशे.भा.६२०.(नि.३६).न.सू.गा.५४.)।।१२।।>

ʿएदम्हादो वगगणासुत्तादो णव्वदे । पुणो बहुरूवधरिदखंडाणि छोडिय एगरूवधरिदबिदियवियप्पदव्वमवट्ठिदभागहारस्स रूवं पडि समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगखंडं तदियवियप्पदव्वं होदि । बिदियभाववियप्पं तप्पाओग्गअसंखेज्जरूवेहि गुणिदे तदिय भाववियप्पो होदि । खेत्त-काला जहण्णा चेव । सेसखंडाणि अवणेदूण एगरूवधरिदं तदियवियप्पदव्वमवट्ठिदविरलणाए समखंडं कादूण दिण्णे चउत्थवियप्पदव्वं होदि । तदियभावं पि तप्पाओग्गअसंखेज्जरूवेहि गुणिदे चउत्थो भाववियप्पो होदि । एवमव्वामोहेण पंचम-छट्ठ-सत्तमवियप्पहुडि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता वड्ढावेदव्वो । एवं वड्ढाविदे खेत्तस्स बिदियवियप्पो होदि । कालो पुण जहण्णो चेव । पुणो तदियदव्ववियः-

ʿशंका-< यहां उनकी वृध्दिका, अभाव है, यह कैसे जाना जाता है ? >

ʿसमाधान-< कालकी वृध्दि होनेपर द्रव्यादि चारोंकी वृध्दि होती है । क्षेत्रकी वृध्दि होनेपर कालवृध्दि भजनीय है, अर्थात् वह होती भी है और नहीं भी होती है । द्रव्य और भावकी वृध्दि होनेपर क्षेत्र और कालकी वृध्दि भजनीय है ।।१२।।>

< इस वर्गणासूत्रसे जाना जाता है ।>

< पश्चात् बहरूपधरित खण्डोंको छोडकर एक रूपधरित द्वितीय विकल्प रूप द्रव्यको अवस्थित भागहारके प्रत्येक रूपके ऊपर समखण्ड करके देनेपर उनमें एक खण्ड तृतीय विकल्प रूप द्रव्य होता है । द्वितीय भावविकल्पको उसके योग्य असंख्यात रूपोंसे गुणित करनेपर तृतीय भावविकल्प होता है । क्षेत्र और काल जघन्य ही रहते हैं । शेष खण्डोंको छोड करके एक रूपधरित तृतीय विकल्परूप द्रव्यको अवस्थित विरलनासे विरलितकर समखण्ड करके देनेपर चतुर्थ विकल्परूप द्रव्य होता है । तृतीय भावविकल्पको तत्प्रायोग्य असंख्यात रूपोंसे गुणित करनेपर चतुर्थ भावविकल्प होता है । इस प्रकार अभ्रान्त होकर पंचम, छठा, सांतवा आदि अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र द्रव्य और भावके विकल्पोंको उत्पन्न करना चाहिये । तत्पश्चात् जघन्य क्षेत्रके ऊपर एक आकाशप्रदेश बढाना चाहिये । इस प्रकार बढानेपर क्षेत्रका द्वितीय विकल्प होता है । परन्तु काल जघन्य ही रहता है । पश्चात् वहाँके द्रव्यविकल्पको अवस्थित >

ʿप्पमवट्ठिदभागहारस्स समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगखंडमुवरिमदव्ववियप्पो होदि । तदियभाववियप्पं तप्पाओग्गअसंखेज्जरूवेहि गुणिदे उवरिमोहिभाववियप्पो होदि । एवं पुणो पुणो कादूण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता दव्व-भाववियप्पा उप्पाएयव्वा । एवमुप्पादिदे बिदियखेत्तवियप्पस्सुवरि एगो हि आगासपदेसो वड्ढावेदव्वे । तदो खेत्तस्स तदियवियप्पो होदि । कालो जहण्णो चेव । एवं सणिं सणिंमव्वामोहो अणाठलो समचित्तो सोदारे संबोहेंतो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तदव्व-भाववियप्पे उप्पाइय वक्खाणाइरिओ खेत्तस्स चउत्थ-पंचम-छट्ठ-सत्तमपहुडि जाव अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ते ओहिखेत्तवियप्पे उप्पाइय तदो जहण्णकालस्सुवरि एगो समओ वड्ढावेदव्वो । एवं वड्ढाविदे कालस्स बिदियवियप्पो होदि । पुणो वि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तदव्व-भाववियप्पेसु गदेसु खेत्तम्हि एगो आगास-पदेसो वड्ढावेदव्वो । एदेण कमेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेसु खेत्तवियप्पेसु गदेसु कालम्पि एगसमयं वड्ढाविय कालस्स तदियवियप्पो उप्पाएदव्वो ⌟

ʿएत्थ चोदगो भणादि - अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेसु खेत्तवियप्पेसु गदेसु कालम्मि एगो समओ वड्ढदि त्ति ण घडदे, एवं वड्ढाविज्जमाणे देसोहीए उक्कस्स-

< भागहारके ऊपर समखण्ड करके देनेपर उनमें एक खण्ड उपरिम द्रव्यविकल्प होता है । वहाँके भावविकल्पको तत्प्रायोग्य असंख्यात रूपोंसे गुणा करनेपर अवधिका उपरिम भावविकल्प होता है । इस प्रकार पुन: पुन: करके अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र द्रव्य और भावके विकल्प उत्पन्न कराना चाहिये । इस प्रकार उक्त विकल्पोंको उत्पन्न करानेपर द्वितीय क्षेत्रविकल्पके ऊपर एक आकाशप्रदेशको बढाना

चाहिये । तब क्षेत्रका तृतीय विकल्प होता है । काल जघन्य ही रहता है । इस प्रकार धीरे धीरे भ्रान्तिसे रहित, निराकुल, समचित होकर श्रोताओंको सम्बोधित करनेवाला व्याख्यानाचार्य अंगुलके असंख्यातवें भागमात्र द्रव्य और भावके विकल्पोंको उत्पन्न कराके क्षेत्रके चतुर्थ, पंचम, छठे एवं सातवें आदि अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र तक अवधिके क्षेत्रविकल्पोंको उत्पन्न कराके पश्चात् जघन्य कालके ऊपर एक समय बढावें । इस प्रकार बढानेपर कालका द्वितीय विकल्प होता है । फिरसे भी अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र द्रव्य और भावके विकल्पोंके बीत जानेपर क्षेत्रमें एक आकाशप्रदेश बढाना चाहिये । इस क्रमसे अंगुलको असंख्यातवें भाग मात्र क्षेत्रविकल्पोंके बीत जानेपर कालमें एक समय बढाकर कालका तृतीय विकल्प उत्पन्न कराना चाहिये । >

ʻशंका-< यहां शंकाकार कहता है कि अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र क्षेत्रविकल्पोंके बीत जानेपर कालमें एक समय बढाता है, यह घटित नहीं होता, क्योंकि, इस प्रकार बढानेपर देशावधिका उत्कृष्ट क्षेत्र नहीं उत्पन्न हो सकता, व अपने उत्कृष्ट कालसे असंख्यातगुणा काल >

कदिअणियोगद्दारे देसोहिणाणपरूवणा

ʻखेत्ताणुप्पत्तीदो, सगुक्कस्सकालादो असंखेज्जगुणकालुप्पत्तीए च । तं जहा- देसोहीए उक्कस्सखेत्तं लोगो । उक्कस्सकालो समऊणपल्लं । तत्थ एक्कस्स समयस्स जदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तखेत्तवियप्पा लब्भंति तो आवलियाए असंखेज्जदिभागूणपल्लम्मि केवडिखेत्तवियप्पे लभामो त्ति पमाणेण इच्छागुणिदफलम्मि भागे हिदे असंखेज्जाणि घणंगुलाणि चेव प्पज्जंति, ण उक्कस्सदेसोहिक्खेत्तं लोगो । अथ अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेसु खेत्तवियप्पेसु गदेसु जदि कालस्स एगो समओ वड्ढदि तो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेणूणलोगम्मि केवडियसमयवुड्ढि पेच्छामो त्ति फलगुणिदिच्छा पमाणेण जदि ओवट्टिज्जदि तो लोगस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि, ण देसोहिउक्कस्सकालो समऊणपल्लं । तम्हा आवलियाए असंखेज्जदिभागेणूणसमऊणपल्लेण जहण्णोहिखेत्तेणूणलोगे भागे हिदे लोगस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि । एत्तिएसु खेत्तवियप्पेसु गदेसु कालम्मि एगसमयवुड्ढीए होदव्वमण्णहा पुव्वुत्तदोसप्पसंगादो त्ति ?

ʻणेदं घडदे, एयंतेणेवमिच्छिज्जमाणे वग्गणाए गाहासुत्तउत्तखेत्ताणमणुप्प-त्तिप्पसंगादो । तं जहा- कालेण आवलियाए संखेज्जदिभागं जाणंतो खेत्तेण अंगुलस्स-

< उत्पन्न होगा । वह इस प्रकारसे - देशावधिका उत्कृष्ट क्षेत्र लोक है । उत्कृष्ट काल एक समय कम पल्य है । ऐसी स्थितिमें एक समयके यदि अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र क्षेत्रविकल्प प्राप्त होते हैं तो

आवलीके असंख्यातवें भागसे कम पल्यमें कितने क्षेत्रविकल्प प्राप्त होंगे, इस प्रकार इच्छा राशिसे गुणित फल राशिमें प्रमाण राशिका भाग देनेपर असंख्यात घनांगुल ही उत्पन्न होते हैं, न कि उत्कृष्ट देशावधिका क्षेत्र लोक । अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र क्षेत्रविकल्पोंके बीत जानेपर यदि कालका एक समय बढता है तो अंगुलके असंख्यातवें भागसे हीन लोकमें कितनी समयवृध्दि होगी, इस प्रकार फल राशिसे गुणित इच्छा राशिको यदि प्रमाण राशिसे अपवर्तित किया जाय तो लोकका असंख्यातवां भाग आता है, न कि देशावधिका उत्कृष्ट काल समय कम पल्य । इसलिये आवलीके असंख्यातवें भागसे हीन समय कम पल्यका जघन्य अवधिक्षेत्रसे रहित लोकमें भाग देनेपर लोकका असंख्यातवां भाग आता है । इतने क्षेत्रविकल्पोंके बीतनेपर कालमें एक समय वृध्दि होना चाहिये, क्योंकि, अन्यथा पूर्वोक्त दोषोंका प्रसंग आवेगा ? >

ʻसमाधान-< यह घटित नहीं होता, क्योंकि, एकान्ततः ऐसा स्वीकार करनेपर वर्गणाके गाथासूत्रोंमें कहे हुए क्षेत्रोंकी अनुत्पत्तिका प्रसंग आवेगा । वह इस प्रकारसे - कालकी अपेक्षा आवलीके संख्यातवें भागको जाननेवाला क्षेत्रसे अंगुलके संख्यातवें भागको जानता है, इस प्रकार >

छक्खंडागमे वेयणाखंडे

ʻसंखेज्जदिभागं जाणदि त्ति सुत्ते उत्तं । आवलियं क्विंचूणं कालदो जाणंतो खेत्तदो घणंगुल जाणदि । कालदो आवलियं जाणंतो खेत्तदो अंगुलपुधत्तं जाणदि । कालदो अध्दमासं जाणंतो खेत्तदो भरहं जाणदि । कालदो साहियमासं जाणंतो खेत्तदो जंबूदीवं जाणदि । कालदो वस्सं जाणंतो खेत्तदो माणुसखेत्तं जाणदि त्ति एवमादियाणि ओहि-खेत्ताणि ण उप्पज्जंति, लोगस्स असंखेज्जदिभागमेत्तखेत्तवुड्ढीए कालम्मि एगसमय-उड्ढीए अब्भुवगमादो । ण च सुत्तविरूध्दा जुत्ती होदि, तिस्से जुत्तियाभासत्तादो ॽ

ʻमा घडदु णाम एदं; कधमुक्कस्स-खेत्त-कालणमुप्पत्ती? वड्ढिणियमाभावादो तेसिमुप्पत्ती घडदे । पढमं ताव अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेसु खेत्तवियप्पेसु गदेसु कालम्मि एगसमओ वड्ढदि । तं जहा - जहण्णकाल आवलियाए संखेज्जदिभागम्मि जहण्णोहिखेत्तेणूणअंगुलस्स संखेज्जदिभागमोहिखेत्तउड्ढिं समखंडं करिय दिण्णे समयं पडि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो पावदि । एत्थ जदि अवट्ठिदा खेत्तउड्ढी तो एगेगरूः-

< सूत्रमें कहा गया है । कालसे कुछ कम आवलीको जाननेवाला क्षेत्रसे घनांगुलको जानता है । कालकी अपेक्षा आवलीको जाननेवाला क्षेत्रसे अंगुलपृथक्त्वको जानता है । कालकी अपेक्षा अर्ध मासको जाननेवाला क्षेत्रकी अपेक्षा भरत क्षेत्रको जानता है । कालकी अपेक्षा साधिक एक मासको जाननेवाला

क्षेत्रसे जम्बूद्वीपको जानता है । कालकी अपेक्षा एक वर्षको जाननेवाला क्षेत्रसे मनुष्यलोकको जानता है, इस प्रकार इत्यादि क्षेत्र नहीं उत्पन्न होंगे, क्योंकि, लोकके असंख्यातवें भाग मात्र क्षेत्रकी वृध्दि होनेपर कालमें एक समयकी वृध्दि स्वीकार की है ! और सूत्रविरूध्द युक्ति होती नहीं है, क्योंकि, वह युक्त्याभास रूप होगी । >

ʻशंकाʼ< यदि यह नहीं घटित होता है तो न हो । परन्तु फिर उत्कृष्ट क्षेत्र और कालकी उत्पत्ति कैसे सम्भव है ? >

ʻसमाधानʼ< वृध्दिके नियमका अभाव होनेसे उनकी उत्पत्ति घटित होती है । प्रथमत: अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र क्षेत्रविकल्पोंके बीत जानेपर कालमें एक समय बढता है । वह इस प्रकार है - आवलीके संख्यातवें भागमेंसे जघन्य कालको कम कर देनेपर शेष आवलीके संख्यातवें भाग मात्र कालवृध्दि होती है । इसे विरलित कर जघन्य अवधिक्षेत्रसे कम अंगुलके संख्यातवें भाग मात्र अवधिकी क्षेत्रवृध्दिको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक समयमें अंगुलका असं-ख्यातवां भाग प्राप्त होता है । यहां यदि अवस्थित क्षेत्रवृध्दि है तो एक एक अंकके प्रति प्राप्त>

कदिअणियोगद्दारे देसोहिणाणपरूवणा

ʻवधरिदखेत्तेसु वड्ढिदेसु कालम्मि वि तस्स तस्स चेव खेत्तस्स हेट्ठिमसमओ ऐगेगो वड्ढावेयव्वो । अह उड्ढी अणवट्ठिदा तो वि पढमवियप्पहुडि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवुड्ढीए असंखेज्जा वियप्पा णेयव्वा, पढमंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेसु खेत्तवियप्पेसु गदेसु कालम्मि एगो समओ वड्ढदि त्ति गुरूवदेसादो । पुणो उवरिमंगुलस्स असंखेज्जदिभागेसु वा तस्सेव संखेज्जदिभागेसु वा खेत्तवियप्पेसु गदेसु कालम्मि एगो समओ वड्ढदि त्ति वत्तव्वं, दोहि वि पयारेहि उड्ढीए विरोहाभावादो। जहण्णकालं किचूणावलियाए सोहिय सेसं विरलिय जहण्णखेत्तेण घणंगुलं समखंडं करिय समयं पडि दादूण अवट्ठिदाणवट्ठिदवड्ढिवियप्पेसु अंगुलस्स असंखेज्जदिभाग-संखेज्जदिभागमेत्तखेत्तवियप्पेसु गदेसु कालम्मि एगो समओ वड्ढदि त्ति पुव्वं व परूवेदव्वं । एवं गंतूण अणुत्तरविमाणवासियदेवा कालदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं खेत्तदो सव्वलोगणालिं जाणंति जहण्णकालूणपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं विरलिय जहण्णखेत्तेण जहण्णादिअध्दाणं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि लोगस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जजगपदरमेत्तो पावेदि । एत्थ एगरूवधरिदमेत्तेखेत्तवियप्पेसु गदेसु कालम्मि एगोʼ

< क्षेत्रोंके बढनेपर कालमें भी उसी क्षेत्रका अधस्तन समय एक एक बढाना चाहिये । अथवा, यदि अनवस्थित वृध्दि है तो भी प्रथम विकल्पसे लेकर अंगुलके असंख्यातवें भाग वृध्दिके असंख्यात विकल्प ले

जाना चाहिये, क्योंकि, प्रथम अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र क्षेत्रविकल्पोंके बीत जानेपर कालमें एक समय बढता है, ऐसा गुरूका उपदेश है । पुन: उपरिम अंगुलके असंख्यातवें भाग अथवा उसके ही संख्यातवें भाग प्रमाण क्षेत्रविकल्पोंके बीतनेपर कालमें एक समय बढता है, ऐसा कहना चाहिये, क्योंकि, दोनों ही प्रकारोंसे वृध्दि होनेका कोई विरोध नहीं है । >

< जघन्य कालको कुछ कम आवलीमेंसे कम करके शेषका विरलन कर जघन्य क्षेत्रसे हीन घनांगुलको समखण्ड करके प्रत्येक समयके ऊपर देकर अवस्थित व अनवस्थित वृध्दिके विकल्पोंमें अंगुलके असंख्यातवें भाग व संख्यातवें भाग मात्र क्षेत्रविकल्पोंके बीतनेपर कालमें एक समय बढता है, एसी पूर्वके समान प्ररूपणा करनी चाहिये । इस प्रकार जाकर अनुत्तर विमानवासी देव कालकी अपेक्षा पल्योपमके असंख्यातवें भाग और क्षेत्रकी अपेक्षा समस्त लोकनालीको जानते हैं, अतएव जघन्य कालसे रहित पल्योपमके असंख्यातवें भागका विरलन कर जघन्य क्षेत्रसे हीन जघन्य आदि अध्वानको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक रूपके प्रति असंख्यात जगप्रतर मात्र लोकका असंख्यातवां भाग प्राप्त होता है । यहां एक रूपधरित मात्र क्षेत्रविकल्पोंके बीत जानेपर कालमें एक समय बढाता है, ऐसा नहीं कहना चाहिये, क्योंकि, इस प्रकार >

छक्खंडागमे वेयणाखंडे

‘समओ वड्ढदि त्ति ण वत्तव्वे, हेट्ठिपरवेज कालाणमभावप्पसंगादो । तेण घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागे कत्थ वि घणंगुलस्स संखेज्जदिभागे कत्थ वि घणंगुले कत्थ वि घणंगुलवग्गे एवं गंतूण कत्थ वि सेडीए कत्थ वि जगपदरे कत्थ वि असंखेज्जेसु जगपदरेसु आदिक्कंतेसु एगो समओ वड्ढदि त्ति वत्तव्वं (१ अंगुलअसंखभागं संखं वा अंगुलं च तस्सेव । संखमसंखं एवं सेढी-पदरस्स अध्दुवगे ।। गो.जी. ४०९.)। तेणुक्कस्सखेत्त-कालाणमुप्पत्ती ण विरूज्झदि त्ति सिध्दं ॽ

‘संपदि एवं ताव णेदव्वं जाव दव्व-खेत्त-काल भावाणं दुचरिमसमाणवड्ढि त्ति । दुचरिमसमाणवड्ढी णाम का ? जम्हि ट्ठाणे चदुण्णमक्कमेण वुड्ढी होदि तिस्से समाणवुड्ढि त्ति सण्णा । तत्थ चरिमसमाणवुड्ढि मोत्तूण हेट्ठिमादुचरिमसमाणउड्ढी णाम । तेत्तियमध्दाणं गंतूण तत्थ को वि भेदो अत्थि तं भणिस्सामो - तत्थ दुचरिमसमाणवड्ढीदो उवरि केत्तिया कालवियप्पा ? एक्को समओ । खेत्तवियप्पा पुण असंखेज्जसेडीमेत्ता वा संखेज्जसेडीमेत्ता वा जगसेडीमेत्ता वा सेडीपढमवग्गमूलमेत्ता वा बिदियवग्गमूलमेत्ता वा घणंगुलमेत्ता वा घणंगुलस्स (संखेज्जदिभागमेत्ता वा घणंगुलस्स) असंखेज्जदिभागमेत्ता वा किंभवंति आहो ण भवंति त्ति पुच्छिदे अंगुलस्स असंखेज्ज-

< अधस्तन क्षेत्र और कालके अभावका प्रसंग आवेगा । इसलिये घनांगुलके असंख्यातवें भाग कहींपर घनांगुलके संख्यातवें भाग, कहींपर घनांगुल, कहींपर घनांगुलके वर्ग, इस प्रकार जाकर कहींपर जगश्रेणी, कहींपर जगप्रतर और कहींपर असंख्यात जगप्रतरोंके बीतनेपर एक समय बढता है; ऐसा कहना चाहिये । इसलिये उत्कृष्ट क्षेत्र और कालकी उत्पत्तिमें कोई विरोध नहीं है, यह सिध्द हुआ । >

< अस इस प्रकार तब तक ले जाना चाहिये जब तक द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी द्विचरम समान वृध्दि नहीं प्राप्त होती । >

ʻशंका– < द्विचरम समानवृध्दि किसे कहते हैं ? >

ʻसमाधान– < जिस स्थानमें चारोंकी युगपत् वृध्दि होती है उसकी समानवृध्दि ऐसी संज्ञा है । उसमें चरम समानवृध्दिको छोडकर उससे नीचेकी वृध्दि द्विचरम समानवृध्दि है । >

< उतना अध्वान जाकर वहां जो कुछ भी भेद है उसे कहते हैं - वहां द्विचरम समानवृध्दिसे ऊपर कितने कालविकल्प हैं ? एक समय रूप एक विकल्प । किन्तु क्षेत्रविकल्प असंख्यात श्रेणी मात्र, अथवा संख्यात श्रेणी मात्र, अथवा जगश्रेणी मात्र, अथवा श्रेणीके प्रथम वर्गमूल मात्र, अथवा द्वितीय वर्गमूल मात्र, अथवा घनांगुल मात्र, अथवा घनांगुलके (संख्यातवें भाग मात्र, अथवा घनांगुलके) असंख्यातवें भाग मात्र क्या होते हैं या नहीं >

कदिअणियोगद्दारे देसोहिणाणपरूवणा

ʻदिभागमेत्ता चेव होंति । कुदो ? आइरियपरंपरागदुवदेसादो । अहवा ण णव्वदे, जुत्ति-सुत्ताणमणुवलंभादो । खेत्तवियप्पेहिंतो दव्व- भाववियप्पा पुण असंखेज्जगुणा । गुणगारो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तदव्व-भाववियप्पेसु गदेसु खेत्तम्मि एगागासपदेसवड्ढीदो । एवं दुचरिमसमाणवड्ढिपरूवणा कदा ।

ʻपुणो दुचरिमसमाणवड्ढीए ओरालियदव्वमवट्ठिदविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे तदणंतरदव्ववियप्पो होदि । दुचरिमसमाणवड्ढीए भावे तप्पाओग्गासंखेज्जरूवेहि गुणिदे तदणंतरभाववियप्पो होदि । एवमंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेसु दव्वभाववियप्पेसु गदेसु खेत्तम्मि एगो आगासपदेसो वड्ढदि । एवमेदेण कमेण णेदव्वं जाव दव्व-भावाणं दुचरिमवियप्पो त्ति । पुणो चरिमदेसोहिउक्कस्सदव्वे उप्पाइज्जमाणे दुचरिमओरालियदव्वमवणेदूण एगसमयबंधपाओग्गकम्मइयवग्गणदव्वमव-ट्ठिदविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे देसोहिउक्कस्सदव्वं होदि (१ एदाहि विभज्जते दुचरिमदेसावहिम्मि वग्गणयं । चरिमे कम्मइयस्सिगिवग्गणमिगिवारभजिदं तु ।।

गो.जी. ३९८.)। खेत्तस्सुवरि एगागास-पदेसे वड्ढिदे लोगो देसोहीए उक्कस्सखेत्तं होदि । कुदो ? वग्गणाए जाव लोगो ताव

< होते, ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि वे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र ही होते हैं; कारण कि ऐसा आचार्यपरम्परागत उपदेश है । अथवा, उक्त क्षेत्रविकल्पोंके विषयमें ज्ञान नहीं है, क्योंकि, तत्सम्बन्धी युक्ति व सूत्रका अभाव है । क्षेत्रविकल्पोंसे द्रव्य और भावके विकल्प असंख्यातगुणे हैं । गुणकार अंगुलका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र द्रव्य और भावके विकल्पोंके बीत जानेपर क्षेत्रमें एक आकाशप्रदेशकी वृध्दि होती है । इस प्रकार द्विचरम समानवृध्दिकी प्ररूपणा की गई है । >

< पुन: द्विचरम समानवृध्दिके औदारिक द्रव्यको अवस्थित विरलनासे समखण्ड करके देनेपर उससे आगेका द्रव्यविकल्प होता है । द्विचरम समानवृध्दिके भावको उसके योग्य असंख्यात रूपोंसे गुणित करनेपर तदनन्तर भावविकल्प होता है । इस प्रकार अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र द्रव्य व भावके विकल्पोंके बीत जानेपर क्षेत्रमें एक आकाशप्रदेश बढता है । इस प्रकार इस क्रमसे द्रव्य और भावके द्विचरम विकल्प तक ले जाना चाहिये । पुन: अन्तिम देशावधिके उत्कृष्ट द्रव्यको उत्पन्न करते समय द्विचरम औदारिक द्रव्यको छोडकर एक समय बन्धके योग्य कार्मण वर्गणा द्रव्यको अविस्थत विरलनासे समखण्ड करके देनेपर देशावधिका उत्कृष्ट द्रव्य होता है । देशावधिके द्विचरम भावको तत्प्रायोग्य असंख्यात रूपोंसे गुणित करनेपर देशा-वधिका उत्कृष्ट भाव होता है । क्षेत्रके ऊपर एक आकाशप्रदेश बढनेपर देशावधिका उत्कृष्ट >

'पडिवादी, उवरि अप्पडिवादि (१ उक्कस्स माणुसेसु य माणुस-तेरिच्छए जहण्णोही । उक्कस्स लोगमेत्तं पडिवादी तेण परमपडिवादी ।। ध.अ.प्र.पत्र.११९२. महाबंध १, पृ.२३. पडिवादी देसोही अप्पडिवादी हवंति सेसाओ । मिच्छत्तं अविरमणं ण च पडिवज्जंति चरिमदुगे ।। गो.जी. ३७५.) त्ति वियणादो । दुचरिमकालस्सुवरि एगसमए पक्खित्ते देसोहीए उक्कस्सकालो समऊणपल्लं होदि ।

'जो एसो अणाइरियाणं वक्खाणकमो परूविदो सो जुत्तीए ण घडदे । कुदो ? सव्वट्ठसिध्दिदेवाणमुक्कस्सोहिदव्वादो उक्कस्सदेसोहिदव्वस्स अणंतगुणत्तप्पसं-गादो । तं जहा-लोगस्स संखेज्जदिभागं सलागभूदं ठवेदूण मणदव्ववग्गणाए अणंतिमभाएण सगोहिणाणावरणकम्मपदेसु णिव्विस्सासोवचएसु समयविरोहेण खंडिदेसु चरिमेगखंडं सव्वट्ठसिध्दिविमाणवासियदेवो जाणदि,

उक्कस्सदेसोहिणाणी पुण एगसमयपबध्दमेगवार-खंडिदं । ण चेगणाणासमयपबध्दकओ विसेसो, एत्थ तग्गुणगारस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तस्स पहाणत्ताभावादो । एसा देवाणमुक्कस्सदव्वुप्पायणविही णासिध्दा, सखेत्ते य सकम्मे रूवयदमणंतभागो त्ति सुत्तसिध्दत्तादो त्ति । तेण जहण्ण-दव्वादो तप्पाओग्गवियप्पेसु गदेसु ओरालियदव्वं सविस्सासोवचयमवणेदूण कम्मइय-

< क्षेत्र लोक होता है, क्योंकि, वर्गणामें जब तक लोक है तब तक प्रतिपाती है तब तक प्रतिपाती है, ऊपर अप्रतिपाती है ऐसा कथन है, अर्थात् क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कर्ष लोकको विषय करनेवाला देशावधि प्रतिपाती और इससे आगेके परमावधि व सर्वावधि अप्रतिपाती हैं । द्विचरम कालके ऊपर एक समयका प्रक्षेप करनेपर देशावधिका उत्कृष्ट काल एक समय कम पल्य होता है । >

< ऐसी जो अन्य आचार्योंके व्याख्यानक्रमकी प्ररूपणा है वह युक्तिसे घटित नहीं होती, क्योंकि, वैसा माननेपर सर्वार्थसिध्दि विमानवासी देवोंके उत्कृष्ट अवधिद्रव्यसे उत्कृष्ट देशावधि-द्रव्यको अनन्तगुणत्वका प्रसंग आवेगा । वह इस प्रकारसे - लोकके संख्यातवें भागको शलाका रूपसे स्थापित करके मनोद्रव्यवर्गणाके अनन्तवें भागका विस्त्रसोपचय रहित अपने अवधिज्ञानावरणकर्मप्रदेशोंमें आगमानुसार भाग देनेपर अन्तिम एक खण्डको सर्वार्थसिध्दि विमानवासी देव जानता है, परन्तु उत्कृष्ट देशावधिज्ञानी एक वार खण्डित एक समयप्रबध्दको जानता है । और एक समयप्रबध्द और नाना समयप्रबध्द कृत भेद भी नहीं है, क्योंकि, यहां पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र उसके गुणकारकी प्रधानताका अभाव है । यह देवोंके उत्कृष्ट द्रव्यकी उत्पादनविधि असिध्द नहीं है, क्योंकि, वह अपने क्षेत्रमेंसे एक प्रदेश उत्तरोत्तर कम करते हुए अपने अवधिज्ञानावरणकर्मका अनन्तवां भाग है इस सूत्रसे सिध्द है । इस कारण जघन्य द्रव्यसे आगे उसके योग्य विकल्पोंके बीत जानेपर विस्त्रसोपचय सहित औदारिक द्रव्यको छोडकर विस्त्रसोपचय रहित कार्मण समयप्रबध्द देना चाहिये, क्योंकि, औदारिक विस्त्रसोपचयोंसे कार्मण विस्त्रसोपचय >

‘समयपबध्दो णिविस्सासोवचओ दायव्वो, ओरालियाविस्सासोवचएहिंतो कम्मइयविस्सासो-वचयाणमणंतगुणत्तादो । ण चेदमसिध्दं, सव्वत्थोवो ओरालियसरीरस्स विस्सासोवचयओ, वेउव्वियसरीरस्स विस्सासोवचओ अणंतगुणो, आहारसरीरस्स विस्सासोवचओ अणंतगुणो, तेयासरीरस्स विस्सासोवचओ अणंतगुणो, कम्मइयसरीरस्स विस्सासोवचओ अणंतगुणो त्ति वग्गणाए सुत्तम्मि अणंतगुणत्तसिध्दीदो त्ति । विस्सासोवचए अवणेदूण ओरालियपरमाणू चेव अवट्ठिदविरलणाए किण्ण

दिज्जंति? ण, विरलणरासीदो ते अणंतगुणहीणा इदि गुरूवदेसादो । विरलणादो कम्मइयदव्वमणंतगुणमिदि कधं णव्वदे? आहारवग्गणाए दव्वा थोवा, तेयावग्गणाए दव्वा अणंतगुणा, भासावग्गणाए दव्वा अणंतगुणा, मणवग्गणाए दव्वा अणंतगुणा, कम्मइयवग्गणाए दव्वा अणंतगुणा त्ति वग्गणासुत्तादो णव्वदे । जदि एवं तो आदिप्पहुडि कम्मइयदव्वं चेव किमिदि मणदव्ववग्गणाए ण खंडिज्जदि ? ण,

< अनन्तगुणे हैं । और यह बात असिध्द भी नहीं है, क्योंकि, औदारिक शरीरका विस्त्रसोपचय सबसे स्तोक है, उससे वैक्रियिक शरीरका विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है, उससे आहार शरीरका विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है, उससे तैजस शरीरका विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है, उससे कार्मण शरीरका विस्त्रसोपचय अनन्तगुणा है, इस प्रकार वर्गणासूत्रसे उसे अनन्तगुणत्व सिध्द है । >

ʿशंका—< विस्त्रसोपचयोंको छोडकर औदारिक परमाणुओंको ही अवस्थित विरलनासे क्यों नहीं देते ? >

ʿसमाधान—< नहीं देते, क्योंकि, वे विरलन राशिसे अनन्तगुणे हीन हैं, ऐसा गुरूका उपदेश है । >

ʿशंका—< विरलन राशिसे कार्मण द्रव्य अनन्तगुणा है, यह कैसे जाना जाता है ? >

ʿसमाधान—< आहार वर्गणाके द्रव्य स्तोक हैं, तैजस वर्गणाके द्रव्य उससे अनन्तगुणे हैं, भाषा वर्गणाके द्रव्य उससे अनन्तगुणे हैं, मनोवर्गणाके द्रव्य अनन्तगुणे हैं, कार्मण वर्गणाके द्रव्य अनन्तगुणे हैं, इस वर्गणासूत्रसे वह जाना जाता है। >

ʿशंका—< यदि ऐसा है तो आदिसे लेकर कार्मण द्रव्यको ही मनोद्रव्यवर्गणा द्वारा क्यों खण्डित नहीं करते? >

< तेया-कम्मइयसरीरं तेयादव्वं व भासदव्वं च ।

बौध्दव्वमसंखेज्जा दीव-समुद्दा य वासा य (१ महाबंध १, पृ.२२ देसाहिमज्झभेदे

सविस्ससोवचयतेज-कम्मंगं । तेजोभास-मणाणं वग्गणयं केवलं जत्थ ।।

पस्सदि ओही तत्थ असंखेज्जाओ हवंति दीउवही । वासाणि असंखेज्जा होंति असंखेज्जगुणिदकमा ।। गो.जी. ३९५-३९६. तेया-कम्मसरीरे तेयादव्वे य भासदव्वे य । बोध्दव्वमसंखेज्जा दीव-समुद्दा य कालो य ।। विशे. भा. ६७६ (नि. ४३).) ।।१४।। >

‘इच्चेदीए सुत्तगाहाए सह विरोहादो । तेण कत्थ वि ओरालियसरीरं, कत्थ वि तेयासरीरं, कत्थ वि कम्मइयसरीरं, कत्थ वि तेयादव्वं, कत्थ वि भासादव्वं, कत्थ वि मणदव्वं कत्थ वि कम्मइयदव्वं दादव्वमिदि ।’

‘सेसं पुव्वं व वत्तव्वं । असंखेज्जेसु दव्व-भाववियप्पेसु पुव्वं व अदिक्कंतेसु जहण्णोहिखेत्तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिज्जदि, तदो खेत्तस्स बिदियवियप्पो होदि । एवमसंखेज्जेसु खेत्तवियप्पेसु गदेसु जहण्णकालो आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिज्जदि, तदो कालस्स बिदियवियप्पो होदि । एवं णेदव्वं जाव देसोहीए उक्कस्संते एवं के वि आइरिया देसोहीए परूवणं कुणंति । तण्ण घडदे । कुदो ? पुव्ववक्खाण-

‘समाधान- < नहीं, क्योंकि, ऐसा होनेपर (देशावधिके मध्य विकल्पोंमें जहां अवधिज्ञान) तैजस शरीर, उसके आगे कार्मण शरीर, उसके आगे तेजोद्रव्य अर्थात् विस्रसोपचय रहित तैजस वर्गणा, उसके आगे भाषा द्रव्य अर्थात् विस्रसोपचय रहित भाषा वर्गणा (और उससे आगे मनोवर्गणाको) जानता है, वहां क्षेत्र असंख्यात द्वीपसमुद्र और काल असंख्यात वर्ष प्रमाण है ।। १४ ।। >

< इस सूत्र रूप गाथाके साथ विरोध होगा । इसलिये कहीं औदारिक शरीर, कहीं तैजस शरीर, कहीं कार्मण शरीर, कहीं तैजस द्रव्य, कहीं भाषा द्रव्य, कहीं मन द्रव्य और कहीं कार्मण द्रव्य देना चाहिये । >

< शेष पूर्वके समान कहना चाहिये । पूर्वके समान असंख्यात द्रव्य और भावके विकल्पोंके बीत जानेपर जब जघन्य अवधिक्षेत्रको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणा किया जाता है तब क्षेत्रका द्वितीय विकल्प होता है । इसी प्रकार असंख्यात क्षेत्रविकल्पोंके बीत जानेपर जब जघन्य कालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित किया जाता है तब कालका द्वितीय विकल्प होता है । इस प्रकार देशावधिके उत्कृष्ट विकल्प तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार कितने ही आचार्य देशावधिका प्ररूपण करते हैं । किन्तु वह घटित नहीं होता है, क्योंकि, यहां हम पूछते हैं कि पूर्व व्याख्यानमें कहे हुए अध्वानके सदृश ही इस व्याख्यानका अध्वान है अथवा विसदृश ? >

‘भणिदध्दाणसमाणमेव किमेदस्स वक्खाणस्सध्दाणमाहो विसरिसमिदि? ण ताव समाणपक्खो जुज्जदे, खेत्त-कालाणमसंखेज्जलोगत्तप्पसंगादो । तं जहा - आवलियाए असंखेज्जदिभागछेदणएहि लोगछेदणए ओवट्टिय लध्दं विरलेदूण रूवं पडि गुणगारभूदआवलियाए असंखेज्जदिभागो दादव्वो । विरलणमेत्तेसु

खेत्तवियप्पेसु गदेसु ओहिखेत्तमसंखेज्जलोगमेत्तं होदि, विरलणमेत्तेसु आवलियाए असंखेज्जदिभागेसु अण्णोण्णगुणिदेसु लोगुप्पत्तीदो । एत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागध्दाणे चेव ओहिखेत्तमसंखेज्जलोगमेत्तं जादमेदम्हादो उवरि गच्छ्माणे सुतरामेव खेत्तस्स असंखेज्जलोगत्तं पसज्जदे । एदं च णेच्छिज्जदि, लोगमेत्तमुक्कस्सदेसोहिखेत्तमिदि अब्भुवगमादो । एवं कालस्म वि असंखेज्जलोगप्पसंगो परूवेदव्वो । ण च कालो उक्कस्सओ असंखेज्जलोगो त्ति देसोहीए इच्छिज्जदि, आइरियपरंपरागदुवदेसेण देसोहिउक्कस्सकालस्स समऊणपल्लपमाणत्तसिध्दीदो ।

ʻण बिदियपक्खो वि, पुव्विल्लध्दाणादो अहियध्दाणे अब्भुवगम्ममाणे पुव्विल्लदोस-प्पसंगादो । ण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तखेत्तव्वियप्पब्भुवगमो वि, देसोहीए असंखेज्जलोगमेत्तखओवसमवियप्पाणमभावप्पसंगादो, कालस्सावलियाए असंखेज्ज-

< उक्त दो पक्षोंमें समान पक्ष तो युक्त है नहीं, क्योंकि, ऐसा होनेपर क्षेत्र और कालको असंख्यात लोकपनेका प्रसंग होगा । वह इस प्रकारसे - आवलीके असंख्यातवें भाग अर्धच्छेदोंसे लोकके अर्धच्छेदोंको अपवर्तित करके प्राप्त राशिका विरलनकर प्रत्येक रूपके प्रति गुणकारभूत आवलीका असंख्यातवां भाग देना चाहिये । विरलन मात्र क्षेत्रविकल्पोंके बीत जानेपर अवधिका क्षेत्र असंख्यात लोकप्रमाण होता है, क्योंकि, विरलन मात्र आवलीके असंख्यात भागोंको परस्पर गुणित करनेपर लोककी उत्पत्ति होती है । यहां पल्योपमके असंख्यातवें भाग अध्वानमें ही अवधिक्षेत्र असंख्यात लोक मात्र हो गया है । इससे ऊपर जानेपर स्वयमेव क्षेत्रको असंख्यात लोकपनेका प्रसंग आवेगा । और यह इष्ट नहीं है, क्योंकि, उत्कृष्ट देशावधिका क्षेत्र लोक मात्र है, ऐसा स्वीकार किया गया है । इसी प्रकार कालके भी असंख्यात लोकपनेके प्रसंगकी प्ररूपणा करना चाहिये । और देशावधिका उत्कृष्ट काल असंख्यात लोक प्रमाण है, ऐसा अभीष्ट नहीं है, क्योंकि, आचार्यपरम्परागत उपदेशसे देशावधिका उत्कृष्ट काल एक समय कम पल्य प्रमाण सिध्द है । >

< द्वितीय (असमान) पक्ष भी नहीं बनता, क्योंकि, पूर्वोक्त अध्वानसे अधिक अध्वान स्वीकार करनेपर पूर्वोक्त दोषका प्रसंग आवेगा । यदि पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र क्षेत्रविकल्पोंको स्वीकार करें तो वह भी नहीं बनता, क्योंकि, ऐसा स्वीकार करनेपर देशावधिके असंख्यात लोक मात्र क्षयोपशमविकल्पोंके अभावका प्रसंस होगा, तथा कालके आवलीके असंख्यातवें भागत्वका प्रसंग भी होगा । दूसरी बात यह है कि क्षेत्र और कालके क्षयोपशम >

ʻदिभागत्तप्पसंगादो च । किंच खेत्त-कालाणं खओवसमा णासंखेज्जगुणकम्मेण देसोहिम्हि अवट्ठिदा ।ʼ

< अंगुलमावलियाए भागमसंखेज्ज दो वि संखेज्जा ।

अंगुलमावलियंतो आवलियं चांगुलपुधत्तं ।। १५ ।। >

ʻइच्चादिवग्गणगाहासुत्तेहि सह विरोहादो । एवमोही परूविदा ।ʼ

ʻअवधयश्च ते जिनाश्च अवधिजिना: । कधमोहिणाणस्स गुणस्स गुणित्तं जुज्जदे? ण, गुणिव्वदिरेगेण गुणाणमभावादो किमट्ठमोहिणा जिणा विसेसिज्जंते? अणोहिजि-णपडिसेहट्टं । के ओहिजिणा? तिरयणसहिदोहिणाणिणो। तेसिं णमो णमोक्कारो होदिʼ

< असंख्यातगुणित क्रमसे देशावधिमें अवस्थित नहीं है, क्योंकि, >

< प्रथम काण्डकमें जघन्य देशावधिका क्षेत्र अंगुलका असंख्यातवां भाग और जघन्य काल आवलीका असंख्यातवां भाग है । इसी काण्डकमें उत्कृष्ट क्षेत्र और काल क्रमश: अंगुल व आवलीके संख्यातवें भाग प्रमाण है । तृतीय काण्डकमें क्षेत्र अंगुलपृथकत्व और काल आवली प्रमाण है ।। १५ ।। >

< इत्यादि वर्गणाके गाथासूत्रोंके साथ विरोध होगा । इस प्रकार अवधिज्ञानकी प्ररूपणा की गई है । >

< अवधिज्ञान स्वरूप जो जिन वे अवधिजिन हैं । >

ʻशंकाʼ- < गुण स्वरूप अवधिज्ञानके गुणीपना कैसे युक्त है ? >

ʻसमाधानʼ- < यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, गुणीको छोडकर गुणोंका अभाव है । अर्थात् गुण और गुणीमें भेद न होनेसे अवधिज्ञान स्वरूप जिनके कहनेमें कोई विरोध नहीं हैं । >

ʻशंकाʼ- < जिनोंको अवधिसे विशेषित किसलिये किया जाता है ? >

ʻसमाधानʼ- < जो अवधिज्ञानसे रहित जिन हैं उनका निषेध करनेके लिये जिनोंको अवधिसे विशेषित किया गया है । >

ʻशंकाʼ- < अवधिजित कौन है ? >

ʻसमाधानʼ- < रत्नत्रय सहित अवधिज्ञानी अवधिजिन हैं । >

< ऐसे अवधिजिनोंको नम: अर्थात् नमस्कार हो यह अभिप्राय है । >

ʿत्ति वुत्तं होदि । महव्वयविरहिददोरयणहराणं ओहिणाणीणमणोहिणाणीणं च किमट्ठं णमोक्कारो ण कीरदे ? गारवगरूवेसु जीवेसु चरणाचारपयट्टावणट्टं उत्तिमग्गविसयभ- त्तियपयासणट्टं च ण कीरदे । एवं देसोहिजिणाणं णमोक्कारं काऊण परमोहिजिणाणं णमोक्कारकरणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

ʿणमो परमोहिजिणाणं ।। ३ ।।

ʿपरमो ज्येष्ठ; परमश्चासौ अवधिश्च परमावधिः । कधमेदस्स ओहिणाणस्स जेट्ठदा ? देसोहिं पक्खिदूण महाविसयत्तादो, मणपज्जवणाणं व संजदेसु चेव समुप्पत्तीदो सगुप्पण्णभवे चेव केवलणाणुप्पत्तिकारणत्तादो, अप्पडिवादित्तादो वा जेट्ठदा । परमाव- धयश्च ते जिनाश्च परमावधिजिनाः, तेभ्यो नमः । जदि देसोहिणाणादो परमोहिणाणं-

ʿशंका- < महाव्रतोंसे रहित दो रत्नों अर्थात् सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञानके धारक अवधिज्ञानी तथा अवधिज्ञानसे रहित जीवोंको भी क्यों नही नमस्कार किया जाता ? >

ʿसमाधान- < अहंकारसे महान् जीवोंमें चरणाचार अर्थात् सम्यक् चारित्र रूप प्रवृत्ति करानेके लिये तथा प्रवृत्तिमार्गविषयक भक्तिके प्रकाश्नार्थ उन्हें नमस्कार नहीं किया जाता है । >

< इस प्रकार देशावधिजिनोंको नमस्कार करके परमावधिजिनोंको नमस्कार करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं- >

< पमावधिजिनोंको नमस्कार हो ।। ३ ।। >

< परम शब्दका अर्थ ज्येष्ठ है । परम ऐसा जो अवधि वह परमावधि है । >

ʿशंका- < इस अवधिज्ञानके ज्येष्ठपना कैसे है ? >

ʿसमाधान- < चूंकि यह परमावधि ज्ञान देशावधिकी अपेक्षा महा विषयवाला है, मनःपर्ययज्ञानके समान संयत मनुष्योंमें ही उत्पन्न होता है, अपने उत्पन्न होनेके भवमें ही केवलज्ञानकी उत्पत्तिका कारण है, और अप्रतिपाती है अर्थात् सम्यक्त्व व चारित्रसे च्युत होकर मिथ्यात्व एवं असंयमको प्राप्त होनेवाला नहीं है; इसीलिये उसके ज्येष्ठपना सम्भव है । >

< परमावधिरूप ऐसे वे जिन परमावधि जिन हैं । उनके लिये नमस्कार है । >

ʿशंका- < यदि देशावधि ज्ञानसे परमावधि ज्ञान ज्येष्ठ है तो इसको ही पहिले >

ʿजेट्ठ होदि तो एदस्सेव पुव्वं णमोक्कारो किण्ण कदो ? ण, देसोहीदो चेव परमोहिसरू-वावगमो, ण अण्णहा त्ति जाणवणट्ठं देसोहीए पुव्वं णमोक्कारकरणादो, परमोहिसरू-वावगमणिमित्तत्तणेण परमोहिं पेक्खिय महल्लत्तादो वा । कधं देसोहीदो परमोहिसरू-वमवगम्मदे ? उच्चदे एत्थ सुत्तगाहा-

< परमोहि असंखेज्जाणि लोगमेत्ताणि समयकालो दु ।

रूवगद लहइ दव्वं खेत्तोवमअगणिजीवेहि (१ महाबंध १, पृ.२२.

परमोहि असंखेज्जा लोगमित्ता समा असंखिज्जा । रूवगयं लहइ

सव्वं खेत्तोवमियं अगणिजीवा ।। विशे. भा. ६८८ (नि ४५).)।। १६ ।। >

ʿएदीए गाहाए परमोहिदव्व-खेत्त-काल-भावाणं परूवणा कदा । तं जहा-परमावधिरसंख्येयानि लोकमात्राणि लोकप्रमाणानि लभते जानातीत्यर्थ: । एदेण खेत्तपमाणं-

< नमस्कार क्यों नहीं किया ? >

ʿसमाधान-< नहीं क्योंकि, देशावधिसे ही परमावधिके स्वरूपका ज्ञान होता है, अन्यथा नहीं होता, इस बातके ज्ञापनार्थ देशावधिको पूर्वमें नमस्कार किया है । अथवा परमावधिके स्वरूपके जाननेका निमित्त होनेसे परमावधिकी अपेक्षा चूंकि देशावधि महान् है, अत: उसे पहले नमस्कार किया है । >

ʿशंका-< देशावधिसे परमावधिके स्वरूपका ज्ञान कैसे होता है ? >

ʿसमाधान-< यहां सूत्र गाथा कहते हैं- >

< परमावधि उत्कृष्टसे क्षेत्रकी अपेक्षा असंख्यात लोकमात्र क्षेत्रको, कालकी अपेक्षा असंख्यात लोक मात्र समयरूप कालको जानता है । वही (शलाकाभूत) क्षेत्रोपम अग्निकायिक जीवोंसे परिच्छिन्न रूपगत द्रव्यको उत्कृष्टसे विषय करता है ।। १६ ।। >

ʿविशेषार्थ-< परमावधिका विषयभूत उत्कृष्ट क्षेत्र असंख्यात लोकप्रमाण है और उत्कृष्ट काल भी असंख्यात लोकमात्र ही है । उसीके विषयभूत उत्कृष्ट द्रव्यको जाननेके लिये यही प्रक्रिया है - तेजकायिक जीवकी जघन्य अवगाहनाको उसकी ही उत्कृष्ट अवगाहनामेंसे घटाकर शेषमें एक रूप मिला देनेपर जो प्राप्त हो उसे तेजकायिक राशिसे गुणा करनेपर शलाका राशि उत्पन्न होती है । अब देशावधिके उत्कृष्ट द्रव्यमें मनोवर्गणाके अनन्तवें भाग रूप ध्रुवहारका वार वार भाग देकर शलाका राशिमेंसे एक एक कम करते जाना चाहिये । इस प्रकार शलाका राशिके समाप्त होनेपर अन्तमें जो द्रव्यविकल्प प्राप्त होता है

वह रूपगत है, और वही परमावधिका उत्कृष्ट विषय है । यही शलाका राशि परमावधिके विषयभूत क्षेत्र, काल एवं भावके विकल्पोंके जाननेमें भी निमित्त है । >

< इस गाथा द्वारा परमावधिके द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी प्ररूपणा की गई है, वह इस प्रकारसे-परमावधि असंख्यात लोक मात्र अर्थात् लोक प्रमाणोंको प्राप्त करता है, जानता है । इससे क्षेत्रप्रमाणकी प्ररूपणा की है । समय ऐसा जो काल वह समय- >